Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास में शिक्षक की भूमिका

श्रीमति नीलम खासकलम*

* वरिष्ठ व्याख्याता, मॉर्डन ऑफिस मैनेजमेंट, इं.गां.शा.पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – किसी ही राष्ट्र की समग्र प्रगति व आर्थिक प्रगति, मूल्यपरक शिक्षा की गुणवत्ता से दृढ़ता से जुड़ी है। शिक्षा ही है जो समग्र प्रगति के साथ-साथ किसी विशेष क्षेत्र, राज्य या देश के मानक को भी निर्धारित करती है। शिक्षा आज एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गई है जो किसी व्यक्ति की सफलता निर्धारित करती है शिक्षा मानवीय विकास का अनिवार्य हिस्सा बन गई है। शिक्षा का सबसे बड़ा पहलू तकनीकी शिक्षा है। तकनीकी शिक्षा मनुष्य को गहराई तक उतरने में सक्षम बनाती है, जीवन की वास्वविकताएं और उसके सामने जीवन की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। शिक्षा में शिक्षक के महत्व को देखते हुए आवश्यक है कि एक योग्य और कुशल व्यक्ति को ही शिक्षक बनाया जाये ताकि तकनीकी शिक्षा में गुणवत्ता बनी रहे। तकनीकी शिक्षा में इस गुणवत्ता को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास में शिक्षक को नवीनतम तकनीकों से परिचित होना चाहिए। छात्रों को प्रेरित कर उन्हें सकारात्मक सीखने का वातावरण तैयार करना चाहिए।

शब्द कुंजी – गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शिक्षक की भूमिका।

प्रस्तावना – शिक्षा एक सतत् और अनवरत गतिमान प्रक्रिया है जिस प्रकार जल प्रवाह उच्च तल से निम्न तल की ओर प्रवाहमान होता है। उसी प्रकार शिक्षा का प्रवाह भी उच्च तल से निम्न तल की ओर प्रवाहमान होता है। शिक्षा के सर्वोच्च स्तर पर विश्वविद्यालयों महाविद्यालय, इंजीनियरिंग कॉलेजों और मेडीकल कॉलेजों के शिक्षक आते हैं जो अपने अन्त:करण में संग्रहित ज्ञान को हस्तांतरित करते हैं। शिक्षक शिक्षा प्रवाह की महत्वपूर्ण कड़ी है जो प्राप्त ज्ञान का परिमार्जन और संशोधन करके निष्पक्ष भाव से छात्रों तक पहुंचाते है। देश काल परिस्थितियों के अनुकूल इस ज्ञान में परिवर्तन होते रहते है किसी विशिष्ट कालावधि में जो ज्ञान देश, समाज और मानव जाति के हित में होता है। उसे उस कालावधि की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहते है इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक परिवर्तनशील घटक है जो परिस्थितियों के अनुरूप बदलता रहता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा:-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संबंध में आधुनिक शिक्षा शास्त्री **आर. एस. पीटर्स** के अनुसार,'विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, समाजषास्त्र आदि में तथ्यों का जो ज्ञान कराया जाता है और विभिन्न व्यवसायों इंजीनियरिंग एवं मेडीकल आदि में जो प्रशिक्षण दिया जाता है उसे शिक्षा नहीं कहा जा सकता है। केवल ज्ञान प्राप्त करना शिक्षा नहीं है जो ज्ञान प्राप्त है उसका प्रयोग करना ही शिक्षा है।'

इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो मानव के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक विकास के साथ विषय ज्ञान, तकनीकी ज्ञान, प्रयोगात्मक ज्ञान प्रदान करती है और उस ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में उपयोग करना सिखाती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जो देश की भावी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण, शिक्षक, वैज्ञानिक, आवश्यक इंजीनियर एवं कर्मचारियों का सृजन कर सके। जो व्यक्ति को स्वालम्बी बना कर स्वयं जीविकोपार्जन कर अन्य व्यक्तियों को भी रोजगार देने की सर्मथता रखे।

तकनीकी शिक्षा:- तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान के साथ राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महती भूमिका अदा करती है। तकनीकी शिक्षा में इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, वास्तुकला, नगर योजना फार्मेसी, अनुप्रयुक्त कला एवं शिल्प होटल प्रबंधन और केटरिंग प्रौद्योगिकी शामिल है। तकनीकी शिक्षा औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाने, जीवन की गुणवता में और सुधार करने के लिए कुशल जनशक्ति तैयार कर देश को विकास पथ पर अग्रसर करती है।

तकनीकी शिक्षा का किसी देश की आर्थिक स्थिरता से गहरा संबंध है। अच्छे तकनीकी कौशल नए तकनीकी नवाचारों को प्रभावित करते हैं जो राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर की नौकरियों की प्राप्ति में सहायक हैं इसलिए तकनीकी शिक्षा के लिए तकनीकी कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम और विषय सामग्री की समय-समय पर समीक्षा कर यह सुनिश्चित किया जाये कि वे अद्यतन हैं और अन्तराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप देश की तकनीकी आवष्यकताओं को प्रभावी ढंग़ से पूर्ण करती हैं।

शिक्षक की भूमिका:- ज्ञान समाज में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन का ऐजेण्ट शिक्षक है। एक शिक्षक को नई परिस्थितियों से निपटने के लिए कई शैक्षणिक और उपदेशात्मक कौशल का आवश्यकता होती है। शिक्षक को पाठ्यक्रम का नेता होना चाहिए जो यह सुनिश्चित करे कि छात्रों का समग्र विकास हो। शिक्षण पाठ्यक्रम तकनीकी शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े क्षेत्रों में छात्रों को शैक्षणिक और व्यावसायिक तैयारी कराती है। मानव संसाधन विकास से आर्थिक विकास तक का पुल योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा बनाया जा सकता है।

शिक्षा में तकनीकी का उपयोग आधुनिक समय में अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गया है। तकनीकी विज्ञान इतना समृद्ध और शक्तिशाली हो गया है कि इसके अध्ययन के बिना शिक्षण संबंधी ज्ञान और कौशल अधूरा है। तकनीकी, शिक्षा के क्षेत्र में पुरानी अवधारणाओं में आधुनिक संदर्भ के

साथ परिवर्तन कर उन्हें एक नवीन स्वरूप प्रदान कर रहा है। इससे शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हो रहा है और छात्रों को महत्वपूर्ण और व्यापक जानकारी प्राप्त हो रही है।

संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास 2030 एजेंडे में मूलभूत घटकों में शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। जिसका उद्देश्य सभी के समावेशी और समान गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। जिसकी प्राप्ति के लिए डिजिटल तकनीक एक आवश्यक उपकरण के रूप में उदित हुई है। इन तकनीकों ने शिक्षा प्रणाली पर एक शक्तिशाली प्रभाव दिखाया है। कोविड-19 महामारी ने शिक्षा में डिजिटल तकनीकों के अनुप्रयोगों को अधिक संस्थागत बना दिया। इन डिजिटल तकनीकों ने पूरी शिक्षा प्रणाली के साथ शिक्षकों में भी आर्दष बदलाव किया है। इन डिजिटल तकनीकों के उपयोग द्वारा शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदाता है बल्कि एक संरक्षक और मूल्यांकनकर्ता की भूमिका भी अदा कर रहा है। शिक्षक द्वारा शिक्षण में तकनीकी सुधारों ने छात्रों के हाथों में कलम ओर कागज के उपयोग के बजाय विभिन्न प्रस्तुतियों और प्रोजेक्ट बनाने में विभिन्न सॉफ्टवेयर और टूल का उपयोग किया जा रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी एवं सम्प्रेषण तकनीकी निर्भर समाज के लिये शिक्षक को इन विधाओं का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। भारत में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की समस्याओं में संख्यात्मक रूप से द्रुत गति से विकास हुआ है। इसके चलते गुणवत्तापरक तकनीकी शिक्षा एवं शिक्षक उपलब्ध कराने के प्रति एक नया आयाम उभरा है। आज विश्व के सभी राष्ट्र उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इसलिये शिक्षा के औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यमों को विस्तारित किया गया है।

इन सभी प्रयासों में गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षण का मुद्दा भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन गया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षकों की आज बहुत आवश्यकता है।

निष्कर्ष:- गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए आवष्यक है कि ऐसे शिक्षक तैयार किये जाये जो गुणवत्तापूर्ण तकनीकी शिक्षा देने में पूर्णत: सक्षम हो। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में आधुनिक, व्यावहारिक और प्रयोगात्मकता का समावेश किया जाना चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक तकनीकी के उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, लैपटॉप द्वारा विभिन्न नवीन सॉफ्टवेयरों से भली भांति परिचित होना चाहिए। क्योंकि एक स्वस्थ समाज एवं योग्य नागरिकों के निर्माण में आध्यापकों से एक विशेष स्तर के उत्तरदायित्व के निर्वाह की अपेक्षा की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा आर.ए. एवं चतुर्वेदी, शिक्षा अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी, संस्करण-2005, आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
2. अध्यापक शिक्षा के कतिपय विशिष्ट मुद्दे एवं संदर्भ/राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, 2004
3. राव वी.के. और रेडडी और एस 1992 शिक्षक एवं शिक्षण तकनीकी नई दिल्ली कॉमनवेल्थ पब्लिसर्स।
4. गुणात्मक अध्यापक शिक्षा का पाठ्यचर्चा प्रारूप/राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली, 1999

****